वास्तविक शिक्षण अभ्यास

अंतिम सोपान छात्राध्यापन है, जो वास्तविक दशाओं में किया जाता है शिक्षण अभ्यास के प्रथम सोपान में शिक्षण कौशलों का सैद्धांतिक विवेचन,द्वितीय सोपान में रचित दशाओं में, विश्लेषणात्मक ढंग से विभिन्न कौशलों के प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है। अलग-अलग अभ्यास द्वारा दक्षता प्राप्त विभिन्न शिक्षण कौशलों का युग्मन शिक्षण अभ्यास के तृतीय सोपान में किया जाता है। यह शिक्षण कौशलों की संश्लेषणात्मक अवस्था होती है। इस व्यवस्था में विभिन्न शिक्षण कौशलों का एक युग्मित रूप में प्रयोग करते हैं, जिसमें रचित दशाओं में सीखे हुए शिक्षण कौशलों का वास्तविक दशाओं में शिक्षण करते समय, उचित प्रयोग करने की क्षमता का विकास होता है।

क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)

क्रियात्मक अनुसंधान का इतिहास (History of Action Research):

आधुनिक प्रजातान्त्रिक शासन की माँग, वैज्ञानिक चेतना का विकास तथा शिक्षा के क्षेत्र में सुधार एवं परिवर्तन की आवश्यकता के कारण क्रियात्मक अनुसंधान का आविर्भाव हुआ। क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का प्रयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के समय सर्वप्रथम कॉलियर ने किया। इनका मानना था कि जब तक उस कार्य से सम्बन्धित व्यक्ति, जिसमें कि सुधार की आवश्यकता है, स्वयं अनुसंधान कार्य में भाग नहीं लेंगे तब तक उस कार्य में सुधार की आशा करना मात्र कल्पना होगी। सन् 1946 में लेविन ने सामाजिक सम्बन्धों की दिशा में सुधार करने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली पर बल दिया। राइटस्टोन ने पाठ्यक्रम ब्यूरों के कार्यों का विवरण देते समय 'रिसर्च एक्शन' (Research Action) शब्द का प्रयोग किया। ताबा, ब्रेडी तथा रॉबिन्सन में क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग 'समस्या समाधान की एक विशिष्ट विधि के रूप में किया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान का विकास सन् 1926 ई० में माना जाता है। बकिंघम ने अपनी पुस्तक 'रिसर्च फोर टीचर्स' में अध्यापकों के लिए अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया। परन्तु स्टीफेन एम. कोरी (Stifen M. Corey) ने सन् 1953 में क्रियात्मक अनुसंधान का शिक्षा की समस्याओं के लिए सर्वप्रथम प्रयोग किया।

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Action Research)

क्रियात्मक अनुसंधान का तात्पर्य एक ऐसी वैज्ञानिक खोज से है जिसका सम्बन्ध शिक्षा के क्रियात्मक पक्ष से होता है। इसके द्वारा विद्यालय की कार्यप्रणाली की समस्याओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप में किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया समस्या केन्द्रित होती है। इसका उद्देश्य न तो शोध प्रबन्ध लिखना होता है और न ही उपाधि प्राप्त करना। इसका उद्देश्य विद्यालय की कार्यप्रणाली की समस्या का समाधान करके उसमें सुधार एवं परिवर्तन लाना होता है। क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं किया जाता अपितु सभी प्रकार की समस्याओं में प्रयोग किया जाता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभ्यासकर्ता अपनी कार्यप्रणाली की समस्याओं के अध्ययन के लिये क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करते हैं।

"स्टीफेन एम. कोरी के अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा इस प्रकार है- "अभ्यासकर्ता जिस प्रक्रिया के माध्यम से अपनी समस्याओं को वैज्ञानिक पद्धति से अपने निर्णयों का निर्देशन, संशोधन एवं मूल्यांकन करके व्यवहार में लाते हैं क्रियात्मक अनुसंधान कहलाती हैं।

"The process by which practitioners attempt to study their problems scientifically in order to guide, correct and evaluate their decisions and actions is what a number of people have called action research."- Stephen M. Corey

मैकग्रेथ तथा अन्य के अनुसार “क्रियात्मक अनुसंधान संगठित खोज की क्रिया है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति विशेष या समूह की क्रिया में परिवर्तन तथा विकास करने के लिए अध्ययन करना तथा रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत करना हैं।"

"Action research is organised, investigative activity aimed towards the study and a constructive change of a given endeavour by individuals or group concerend with such change and improvement."- Mcgrathate & Others

गुड - "क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों एवं प्रशासकों द्वारा अपने कार्यों एवं नियमों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।

Action Research is reserach used by teachers supervisors and administrators to improve the quality of their decisions and actions" - Good.

रिसर्च इन एजुकेशन "क्रियात्मक अनुसंधान वह अनुसंधान है जो एक व्यक्ति अपने उद्देश्यों को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्राप्त करने के लिए करता है।"

"Action research is the research that a person conducts in order to enable him to achieve his purposes more effectively." - Research in Education

क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषाओं का सारांश यह है कि-

1. क्रियात्मक अनुसंधान जनतान्त्रिक भावनाओं पर आधारित है।

2. इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान के सभी पद निहित होते हैं।

3. क्रियात्मक अनुसंधान में शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान खोजा जाता है।

4. क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों तथा शैक्षिक प्रशासकों की समस्याओं का समाधान करके विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार करता है।

शिक्षा के विकास की दृष्टि से क्रियात्मक एवं मौलिक अनुसंधान दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों में विधि की दृष्टि से कोई विशेष अन्तर नहीं है। दोनों अनुसंधान वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित होते हैं तथा दोनों में किसी समस्या का समाधान अभीष्ट होता है। जॉन डब्ल्यू. बेस्ट (John W. Best) ने कहा है कि क्रियात्मक एवं मौलिक अनुसंधान में कोई अन्तर्द्वन्द्व नहीं है और दोनों में उच्चकोटि की वस्तुनिष्ठता अपेक्षित है। परन्तु मौलिक अनुसंधान के अन्तर्गत शिक्षा के मौलिक तत्वों की खोज की जाती है जबकि क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत शिक्षा की प्रक्रिया में दिन-प्रतिदिन उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य (Objectives of Action Research)

1.विद्यालय की कार्यप्रणाली तथा स्थिति में प्रगति, सुधार एवं परिवर्तन करना।

2. विद्यालय में रूढ़िवादी तथा यान्त्रिक वातावरण को समाप्त करके जनतन्त्रीय भावना का विकास करना।

3.शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक, निरीक्षक तथा अन्य कार्यकर्ताओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।

4.छात्रों की रूचियों आवश्यकताओं एवं योग्यताओं का अध्ययन करके शिक्षण पद्धति में परिवर्तन एवं सुधार करना।

5.रोचक एवं उपयोगी पाठ्यक्रम का विकास करना।

6.शिक्षकों एवं छात्रों के मध्य सामाजिक या अन्य कारणों से आयी विसंगतियों को दूर करना।

7.छात्रों के निष्पत्ति स्तर एवं आकांक्षा स्तर में वृद्धि करना।

8.शिक्षकों तथा विद्यालय के कार्यकर्ताओं में कार्यकौशल का विकास करना।

9.छात्रों की किशोर-अपराध, पिछड़ापन तथा अनुशासनहीनता आदि समस्याओं को हल करने में सहायता करना।

10.विद्यालय के प्रशासकों एवं प्रबन्धकों को विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार करने के लिए सुझाव देना।

क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र (Scope of Action Research)

क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग विद्यालय की कार्यप्रणाली के निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जाता है :-

कक्षा शिक्षण की विधियों, प्रविधियों तथा युक्तियों में सुधार के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली सहायक सामग्री की उपयोगिता के सम्बन्ध में निर्णय लेने के

लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

छात्रों की रूचि, ध्यान, तत्परता एवं जिज्ञासा में वृद्धि के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

छात्रों की अनुशासनहीनता एवं किशोर-अपराध से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए इसे प्रयुक्त किया जाता है।

छात्रों की अनुपस्थिति, कक्षा में विलम्ब से आने तथा विद्यालय से भाग जाने की समस्या के समाधान के लिए इसे प्रयोग किया जाता है।

वाचन एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों आदि समस्याओं के समाधान के लिए भी इसे प्रयुक्त किया जाता है।

विभिन्न विषयों में गृहकार्य के लिए प्रोत्साहित करने तथा परीक्षा में नकल रोकने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

विद्यालय के संगठन एवं प्रशासन से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए इसे प्रयुक्त किया जाता है।

शिक्षक तथा विद्यालय के सभी कार्यकर्ताओं को जागरूक एवं प्रोत्साहित करने में भी क्रियात्मक अनुसंधान सहायक होता है।

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान (Steps of Action Research)

क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग विद्यालय की कार्यप्रणाली के निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जाता है :-

1.समस्या का पहचानना (Identification of Problem)- क्रियात्मक अनुसंधान का प्रथम एवं महत्वपूर्ण पद समस्या के क्षेत्र (Problem Area) को पहचानना होता है। जब तक समस्या की अनुभूति नहीं होगी तब तक अनुसंधान का प्रारम्भ नहीं हो सकता। समस्या जितनी अधिक स्पष्ट होगी अनुसंधान उतना ही सफल एवं उद्देश्यपूर्ण होगा। इसके लिए अनुसंधानकर्ता को व्यापक, उदार एवं स्वस्थ दृष्टिकोण रखते हुए संवेदनशीलता के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित किसी ऐसी समस्या का चयन करना चाहिए जिसका समाधान दूसरी अन्य समस्याओं से पहले होना आवश्यक है। क्रियात्मक

अनुसंधान की समस्याएँ मुख्य रूप से निम्न स्त्रोतों से सम्बन्धित हो सकती हैं - (क) कक्षा शिक्षण से सम्बन्धित, (ख) परीक्षण से सम्बन्धित, (ग) पाठ्य- सहगामी क्रियाओं से सम्बन्धित तथा (घ) प्रशासन से सम्बन्धित।

2.समस्या का परिभाषीकरण एंव सीमाकंन (Defining and Delimiting the Problem) समस्या को व्यापक रूप से पहचानने के बाद क्रियात्मक अनुसंधान प्रणाली में दूसरा सोपान समस्या का परिभाषीकरण एवं सीमांकन करना है। परिभाषीकरण के अन्तर्गत समस्या के प्रत्येक पहलू को स्पष्ट एवं निश्चित कर दिया जाता है। सीमांकन के अन्तर्गत समस्या का प्रमुख बिन्दु निश्चित करके कार्य-क्षेत्र को सीमित कर दिया जाता है जिससे उसका वैज्ञानिक अध्ययन सफलतापूर्वक किया जा सके।

3.समस्या के सम्मावित कारणों का विश्लेषण (Analysing the Causes of the Problem) तीसरे पद में समस्या के सम्भावित कारणों का विश्लेषण किया जाता है। इसके लिए अनुसंधानकर्ता अनेक प्रकार की साक्षियाँ (Evidences) एकत्र करता है। तत्पश्चात् सम्भावित कारणों का पता लगाकर एक विस्तृत सूची तैयार की जाती है तथा वैज्ञानिक दृष्टि से कारणों का विश्लेषण किया जाता हैं।

4.क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण (Formulation of Action Hypothesis) क्रियात्मक अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण पद क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण करना होता है। समस्या के संभावित कारणों का विश्लेषण करने के पश्चात् इस बात का पता लगाया जाता है कि वह कौन सा महत्त्वपूर्ण कारण है जिसे दूर करके समस्या का समाधान किया जा सकता है। क्रियात्मक अनुसंधान की सफलता का आधार क्रियात्मक परिकल्पना ही होती है। परिकल्पना जितनी अधिक स्पष्ट एवं तथ्यों पर आधारित होगी अनुसंधान में उतनी ही सफलता की आशा की जा सकती है।

5.कार्यरूपरेखा का निर्माण (Fomulation of Working outline) क्रियात्मक परिकल्पना समस्या का सम्भावित समाधान होता है। इसलिए इसकी पुष्टि (Verification) के लिए रूपरेखा तैयार की जाती है। एक समय में एक ही क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि के लिए रूपरेखा तैयार की जाती है। रूपरेखा का स्वरूप निश्चित नहीं होता अपितु अनुसंधानकर्ता अपनी सुविधानुसार उसका स्वरूप निर्धारित करता है। एक अच्छी रूपरेखा समय और धन की दृष्टि से मितव्ययी होती है और समस्या से

उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। क्रियात्मक अनुसंधान की रूपरेखा अधिक लचीली (Flexible) होती है। इसमें प्रदत्तों के संकलन के लिए परीक्षणों का चयन किया जाता है। अपेक्षित परीक्षण उपलब्ध न होने पर अनुसंधानकर्ता स्वयं परीक्षण की रचना करता हैं।

6.निष्कर्षों का प्रतिपादन (Formulation of Conclusions) इस पद में रूपरेखा के अनुसार किये गये कार्यों के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण करके निष्कर्षों का प्रतिपादन किया जाकार्यरूपरेखा का निर्माण (Fomulation of Working outline) क्रियात्मक परिकल्पना समस्या का सम्भावित समाधान होता है। इसलिए इसकी पुष्टि (Verification) के लिए रूपरेखा तैयार की जाती है।

एक समय में एक ही क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि के लिए रूपरेखा तैयार की जाती है। रूपरेखा का स्वरूप निश्चित नहीं होता अपितु अनुसंधानकर्ता अपनी सुविधानुसार उसका स्वरूप निर्धारित करता है। एक अच्छी रूपरेखा समय और धन की दृष्टि से मितव्ययी होती है और समस्या से उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। क्रियात्मक अनुसंधान की रूपरेखा अधिक लचीली (Flexible) होती है। इसमें प्रदत्तों के संकलन के लिए परीक्षणों का चयन किया जाता है। अपेक्षित परीक्षण उपलब्ध न होने पर अनुसंधानकर्ता स्वयं परीक्षण की रचना करता हैं।

निष्कर्षों का प्रतिपादन (Formulation of Conclusions) इस पद में रूपरेखा के अनुसार किये गये कार्यों के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण करके निष्कर्षों का प्रतिपादन किया जाता है जिससे कार्यप्रणाली में सुधार तथा परिवर्तन किया जा सकता है।

एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान योजना के लिए विकसित प्रारूप (AParadigm of Action Research Project as Proposed by NCERT)

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान हेतु अधोलिखित सोपान विकसित किये गये हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना प्रारूप बनाने के लिए कर सकता हैं -

(1) क्रियानुसंधान परियोजना का शीर्षक।

(2) परियोजना के मुख्य एवं गौण उद्देश्य ।

(3) परियोजना की कार्य प्रणाली।

(4)परियोजना कार्यप्रणाली का क्रियावन्यन।

(5)परियोजना की मूल्यांकन व्यवस्था।

(6)परियोजना के लिए बजट प्रारूप।

(7)विद्यालय का नाम, कक्षा व वर्ग तथा छात्रों की संख्या जहाँ क्रियानुसंधान किया जाना है।

(8)विभिन्न विषयों के शिक्षकों की संख्या।

(9)विद्यालय में परियोजना कार्य के लिए उपलब्ध सुविधायें।

(10)परियोजना की उपलब्धियाँ।

शिक्षक इस प्रारूप के आधार पर अपनी क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बना सकता है। है जिससे कार्यप्रणाली में सुधार तथा परिवर्तन किया जा सकता है।

एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान योजना के लिए विकसित प्रारूप
(AParadigm of Action Research Project as Proposed by NCERT)
एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान हेतु अधोलिखित सोपान विकसित किये गये हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना प्रारूप बनाने के लिए कर सकता हैं -

(1) क्रियानुसंधान परियोजना का शीर्षक।

(2) परियोजना के मुख्य एवं गौण उद्देश्य ।

(3) परियोजना की कार्य प्रणाली।

(4)परियोजना कार्यप्रणाली का क्रियावन्यन।

(5)परियोजना की मूल्यांकन व्यवस्था।

(6)परियोजना के लिए बजट प्रारूप।

(7)विद्यालय का नाम, कक्षा व वर्ग तथा छात्रों की संख्या जहाँ क्रियानुसंधान किया जाना है।

(8)विभिन्न विषयों के शिक्षकों की संख्या।

(9)विद्यालय में परियोजना कार्य के लिए उपलब्ध सुविधायें।

(10)परियोजना की उपलब्धियाँ।

शिक्षक इस प्रारूप के आधार पर अपनी क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बना सकता है।

नाटक (ड्रामा)

हम सभी ने नाटक देखे हैं- पारंपरिक एवं आधुनिक दोनों प्रकार के। मंच प्रस्तुतीकरण के विभिन्न प्रकार हैं जैसे निरर्थक थिएटर नुक्कड़ नाटक यक्षगान आदि। हम सभी जानते हैं कि नाटक के मनोरंजन के मूल्य हैं। क्या उनके शैक्षिक मूल्य भी हैं? क्या हम कक्षा कक्षा अधिगम को बढ़ाने के लिए थिएटर तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं?

नाटक का अर्थ है पूर्व निर्धारित संवादों का समुच्चय, जो बोले जाते हैं अभिनेताओं के अभिनय के साथ भंगिमाओं, संगीत एवं नृत्य तथा जैसा मामला हो सकता है के विशेष प्रभाव के साथ-साथ चलता है।

नाटक स्थिर रूप से पूर्व निर्धारित लिखित अंग है। बने बनाए नाटक हैं किंतु वे अध्याय के विषय और विद्यार्थियों के स्तर को नहीं अपना सकते हैं। यह एक रूचिपूर्ण शिक्षक की मांग करता है जो अध्याय में थियेटर के अंग को पहचानता है और कभी-कभी वह संवादों को भी विकसित करता है। वह विद्यार्थियों को पहचानता है जिनके पास अभिनय के लिए एक कौशल होता है और उन्हें भूमिकायें देता है या जरूरतों पर निर्भर पसंद की स्वीकृति देता है। पूर्वाभ्यास संगीत या पोशाक के साथ या बिना, अधिक संख्या में होते हैं। शुरू करने के लिए वहां उपकरणों में संगीत नहीं हो सकता है किन्तु धीरे-धीरे वे सभी प्रवर्तित हो जाते हैं।

नाटक के आयोजन के चरण

-पाठ में रंगमंच के तत्वों का निर्धारण करना।

-पाठ में उस विषय से संबद्ध एक नाटक को ढूंढ़ना एवं पता लगाना।

-पाठ के उपयुक्त होने के लिए नाटक को परिवर्तित करना।

-विद्यार्थियों का निर्णय करना जो ड्रामा में विभिन्न भूमिकाओं में सही होंगे।

-विभिन्न विद्यार्थियों को भूमिकायें आवंटित करना तथा उन्हें संवाद के अंग की नकल करने को कहना।

-विद्यार्थियों को संवादों को दुहराने का समय देना एवं नाटक के विषय को समझना।

-जितने अधिक अपेक्षित हो पूर्वाभ्यासों को करना।

-नाटक का अभिनय करना।

-नाटक की भाषा, विषय, अभिनय, संवाद आदि की उपयुक्तता पर प्रतिपुष्टि देना।

नाटकों में पोशाक, परंपरा से बने या एक रंगमंच कम्पनी से नहीं होते हैं। वे व्यावसायिक नाटकों की तुलना में बहुत सामान्य और कामचलाऊ होते हैं।

कुछ नाटक एक्शन उन्मुख होते हैं किन्तु अन्य बोली उन्मुख होते हैं। आपको विषय एवं विद्यालय में उपलब्ध अभिनेताओं।के प्रकार से संबद्ध निर्णय लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'कष्ण एक बच्चा' नाटक में अधिक क्रिया और विशेष प्रभाव। होंगे जबकि 'छत्रपति शिवाजी' नाटक में शब्दों पर अधिक बल होगा।

शिक्षक का नाटक के मंच का निर्धारण करने से पूर्व लागत मूल्य ,उपलब्ध समय और विद्यालय के दर्शन का मास्तिष्क में रखना पड़ता है।
बहुत से नाटकों को मूल लेखकों से अनुमति लेना अपेक्षित है। शिष्टाचार मांगता है कि अग्रिम में लेखक से अनुमति ली जाये।
यह हमेशा सलाह योग्य है कि आप नाटक को विद्यार्थियों को शामिल करते हुए लिखें। यह विद्यार्थियों में सम्बद्धता का विकसित करता है साथ ही साथ नाटक लेखन कौशल को भी विकसित करता है।

परिचर्चा

परिचर्चा एक व्यापक प्रयुक्त समूह-केन्द्रित अधिगम प्रविधि है। इसे माध्यमिक विद्यालय के संदर्भ में विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग किया जा सकता है। इसका मूल्य मुख्यतः इस यथार्थ में है कि व्यक्तियों से अर्जित ज्ञान, विचार तथा भावनाओं में एक व्यक्ति की अपेक्षा बड़ी विशेषता होती है। इस सिद्धांत पर निर्भर होकर एक तरह के बौद्धिक समूह कार्य को प्रस्तुत करता है (जैरालिमेक, 1986)। परिचर्चा की शक्ति समूह के सदस्यों की व्यापक सहभागिता में स्थित होती है। यह एक साथ सोचने की एक प्रक्रिया होती है तथा यदि समूह या एक सदस्य वर्चस्व स्थापित करता है तो यह उसे समाप्त करती है। यह शिक्षक का उत्तरदायित्व है कि सहभागिता हेतु अधिक योग्य विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए, एक कक्षा परीक्षण के उत्तर पर प्रतिपुष्टि देने, व्याख्यान के उपरांत विद्यार्थियों के संदेह को दूर करना, कक्षाकक्ष समस्या हेतु वैकल्पिक समाधान उत्पन्न करना तथा “शिक्षक की बात" के निरसता को समाप्त करना जैसी कुछ स्थितियाँ हैं जिनमें परिचर्चा प्रविधि का उपयोग किया जा सकता है।

आयोजनः इस प्रविधि के प्रभावी उपयोग हेतु शिक्षक को पर्याप्त रूप से पृष्ठभूमि की सूचना देनी चाहिए ताकि विद्यार्थी पहले से इसे धारण करें एवं इसे परिचर्चा में उपयोग हेतु तैयार रहें। यह परिचर्चा हेतु एक प्राथमिक आवश्यकता है। एक परिचर्चा सूचना के अभाव में नहीं हो सकती है। एक परिचर्चा को आरंभ करने की शिक्षक की योग्यता ,कतिपय स्थगित करने की योग्यता को सुनिश्चित करती है। शिक्षक परिचर्चा किए जा रहे मुद्दे पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत उत्तर पर बाद में अपना निर्णय दे सकता है। शिक्षक का निर्णय अमौखिक इशारे में भी उत्तरों की प्रकृति एवं प्रतिरूप को प्रभावित कर सकता है।

अनुदेशनात्मक क्षमताः यह ज्ञान हेतु पुनर्बलन के अतिरिक्त उच्च संज्ञानात्मक योग्यताओं के प्रभावी रूप में विकसित कर सकता है। इस विकल्प का अनोखापन इसका सरलता में स्थित होती है परंतु इसकी प्रभावकता मध्यस्थ या नेता की योग्यताओं से सम्बन्धित होती है।

परिचर्चा से सम्बन्धित कौशलः जैरॉलिमेड (1986) ने कुछ कौशलों को सुझाया है जिनको एक सामाजिक विज्ञान/अध्ययन के शिक्षक को परिचर्चा में विद्यार्थियों को

सहभागी बनाकर विकसित करना चाहिए। ये कौशल निम्नलिखित हैं:

• जब अन्य व्यक्ति बोल रहे हैं तो ध्यानपूर्वक सुनना।

• वस्तुनिष्ठ रहिए तथा भावुक मत होइए।

•सामाजिक विज्ञान में शिक्षण-अधिगम रणनीतियाँ एवं अधिगम संसाधन खुले विचार वाला बनिए, दूसरों के योगदान का सम्मान एवं स्वीकार्य कीजिए परंतु स्वतंत्र सोचिए।

•परिचर्चा हेतु उत्तरदायित्व को ग्रहण कीजिए तथा तथ्यात्मक प्रमाण के साथ विचारों के समर्थन हेतु योग्य बनिए।

•सभी को सुनाई देने हेतु ऊँचे एवं पर्याप्त रूप में स्पष्ट बोलिए।

•परिचर्चा पर प्रभुत्व मत बनाइए, योगदान को सचेतनपूर्वक तथा संक्षिप्तः व्यक्त किया जाना चाहिए।

•विचारों की स्पष्टता हेतु कहिए तथा विचारों/कथनों को सत्यापित करने हेतु प्रमाणों के लिए कहिए।

•समूह निर्णय पर पहुँचने में या एक विवादित मुद्दे पर परिचर्चा में अर्थ की समस्या को पहचानिए।

•समूह के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने हेतु उत्तरदायित्व को ग्रहण कीजिए।

• एक संतोषप्रद निर्णय पर पहुँचने हेतु समूह की योग्यता में विश्वास ।

• समूह द्वारा एक बार लिए गए निर्णय का समर्थन कीजिए।

परिचर्चा के उदाहरण

• लोगों में लैंगिक संवेदनशीलता

•भारत के युवा-जनांकिक भाग

•सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार – लोकतंत्र की कुंजी।

पत्राधान (Portfolio) आकलन:

पोर्टफोलियो से तात्पर्य बालकों के कार्य के उद्देश्यपूर्ण संग्रह से है जो विद्यार्थी की नियत कालावधि में निर्दिष्ट क्षेत्र में किये गये प्रयासों, प्रगति, या उपलब्धियो की कहानी बताता है। यह विद्यार्थी के प्रपत्रों, विडियो टेपों, प्रगति विवरणों या संबंधित सामग्रियों से भरे लिफाफे से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। पोर्टफोलियो में केवल उत्कृष्ट कार्य ही नहीं अपितु सभी कोटि के कार्यों को रखना चाहिये जिससे कि सम्पूर्ण विद्यालयी वर्ष में बालक की प्रगति और विकास का प्रदर्शन किया जा सके।ऐसा संग्रह शिक्षक और अभिभावकों को दिखाता है कि बालक कितना निपुण है और यह उसके द्वारा किये गये वास्तविक कार्य का रिकॉर्ड (आलेख) है। बालक के द्वारा वर्ष भर में किये गये वास्तविक कार्य का संग्रह पोर्टफोलियो में किया जा सकता है। उदाहरण के लिये, आप अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी का पोर्टफोलियो कक्षा की दीवार पर लिफाफे चिपकाकर कर सकते हैं और विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रकार का कार्य, समय-समय पर उनके अभीष्ट लिफाफों में रखने हेतु निर्देश दे सकते हैं:

- लिखित सामग्री वर्क शीटस, सजनात्मक लेखन, टैस्ट्स, कक्षा के बाहर की गतिविधियों सबधी रिपोट्स।
- विभिन्न चित्रकारी-पौधे, फूल, जानवर आदि ।
- हस्तकला संबंधी कार्य जैसे पेपर फोल्डिंग, पेपर कटिंग।
- बालकों द्वारा तैयार किये गये ग्रीटिंग कार्ड्स।
- दूसरों से बालक को प्राप्त होने वाले पत्र।
- बालक द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की सूची।
- कपड़ों, पत्तियों के संग्रह।
- भय मुक्त विधि के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वारा लिखित दैनन्दिनी (डायरी)।
- . बालक के द्वारा आत्म मूल्यांकन प्रपत्र का नमूना ।

इस प्रकार, पोर्टफोलियो एकमात्र कार्य का अंश के स्थान पर कार्यों का संग्रह होता है।

जैसे-जैसे विद्यालय वर्ष प्रगति करता है, पोर्टफोलियो का संग्रह साथ-साथ बढ़ता रहता है। प्रत्येक नियत अवधि के समापन पर शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी के पोर्टफोलियों को उसकी प्रगति की जाँच के लिये देखता है और विशिष्ट तथा उपयुक्त पृष्ठ पोषण अभिभावकों को देता है। पोर्टफोलियो प्राय: अभिभावकों को उनके अपने बालकों को, उनकी योग्यताओं और रूचियों को जिनका अवलोकन वे घर पर नहीं कर पाते. को समझने में सहायता करता है, और बालकों के प्रदर्शन, प्रगति और विकास की शिक्षक से चर्चा करने में सहायता करता है।

विद्यालय समय-सारणी:

समय-सारणी एक लचीला एवम् विस्तृत समय नियोजन है। यह प्रत्येक विषय एवम गतिविधि को आबंटित समय और क्रम दर्शाता है। यह पाठशाला के सुचारू संचालन को सम्भव बनाता है। पाठशाला की सफलता सही समय-सारणी निर्माण एवम् अनुपालना पर निर्भर करती है।

एक ऐसी समय-सारणी का निर्माण करना जो सर्वमान्य हो, कठिन कार्य है। परन्तु इसका निर्माण आधारभूत मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए। समय, स्थिति, स्थान एवम् उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप इसका परिवर्तनशील होना अनिवार्य गुण है।

आवश्यकता-

•पाठशाला की दैनिक कार्यवाही एवम् गतिविधियों का नियमन करता है।

एक निर्धारित क्रम से पाठशाला का संचालन सम्भव बनता है।

समय और उर्जा की बचत होती है।

•बाल-केन्द्रित शिक्षण शैली की अनुपालना करते हुए दोहराव को रोकता है।

•कार्य का उचित विभाजन सम्भव होता है। जिससे पाठशाला प्रबंधन में सरलता आती

है।

•विभागीय नियमों की अनुपालना करना सरल हो जाता है।

•पाठशाला में अनुशासन स्वत: ही उत्पन हो जाता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु:

•विद्यार्थी कितनी देर तक ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं?

•विद्यार्थियों की एक स्थान पर बैठने की क्षमता।

•सभी विषय अनिवार्य है। सभी को उचित समय मिलना चाहिए।

•एक समय अंतराल को लम्बा रखना या दो पीरियड अलग-अलग समय पर रखना उचित है।

•बच्चों की पसंद का विषय लम्बे समय तक पढ़ाया जाये तो क्या अभिरुची हमेशा बनी रहेगी।

•बच्चें कम पसंद विषय में क्या लम्बे समय तक स्वय को व्यस्त रख पाएंगे?

•क्या छोटा पीरियड उन्हें विविधता उपलब्ध नहीं करवाएगा?

•क्या लम्बा पीरियड अध्यापक एवम् बच्चों के लिए सुविधाजनक है?

•प्राथमिक कक्षाओं में लेखन गति कम होती है।क्या छोटे पीरियड में काम करवाना सम्भव है?

समय-सारणी निर्धारण के सिद्धांत:

समय सारणी निर्धारण के लिए कुछ मूलभूत सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है। ये सिद्धांत समय के अनुसार अनुभव एवम् शैक्षिक अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप निर्मित हुए हैं। बतौर अध्यापक पसंद और अनुभव कैसी भी हों? इनका ध्यान रखना लाभ पहुंचाता है।

1.समुदाय: जिस समुदाय के बच्चे स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं, उनकी विशेषताओं

का ध्यान रखना पाठशाला के लिए लाभदायक होता है।

2.पाठशाला का प्रकार : प्राथमिक, उच्च, वरिष्ठ, ग्रामीण और शहरी आदि कारकों का ध्यान रखना सही समय नियोजन और अनुपालना के लिए लाभदायक होता है।

3.विभागीय नियम : शिक्षा विभाग के नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

4.अध्यापको की उपलब्धता: यह एक कारक ऐसा है जिसे समय-सारणी निर्धारण में विशेष स्थान दिया जाता है। क्योंकि अध्यापकों की संख्या पाठशाला के समय नियोजन को प्रभावित करती है।

5.न्याय का सिद्धांत: सभी अध्यापकों को समान कार्यभार, क्षमता के अनुसार कार्यभर, विद्यार्थियों की क्षमताओं का ध्यान रखना (बैठने, सुनने, ध्यान की क्षमता)

5.थकावट के क्षण: किस पीरियड तक बच्चे शारीरिक एवम् मनोवैज्ञानिक तौर पर थकने लगते हैं का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि इससे उनका ध्यान बंटने लगता है। अरुचि पैदा होने लगती है। सीखना उस गति से नहीं होता। समय व्यर्थ होने लगता है।

6.विविधता का सिद्धांत: बैठने के कमरे, सीट और तरीके में बदलाव रूचि को बनाये रखने में मदद करता है। न केवल विद्यार्थी बल्कि अध्यापक भी नयापन महसूस करता है। जितना सम्भव हो बदलाव करते रहना चाहिए। लगातार शिक्षण अध्यापक एवम् विद्यार्थियों दोनों के लिए नुक्सानदायक है। इसलिए सृजनात्मक कार्यों, खेल, और मनोरंजन की उपलब्धता रहनी चाहिए। इससे कक्षा में नीरसता नहीं आती। एक ही विषय लम्बे समय तक पढ़ना- पढ़ाना भी नीरसता को उत्पन्न करता है। इसलिए छोटा पीरियड लाभदायक होता है।

7.गतिशीलता का सिद्धांत: निर्मित समय-सारणी कठोर नहीं हो सकती। जिसमें परिवर्तन सम्भव न हो। इसका मानवीय संसाधनों के अनुरूप गतिशील एवम् परिवर्तनशील होना अनिवार्य गुण है।

8.कठिनाई और महत्व: कोई भी विषय कठिन नहीं होता न ही कम और जयादा महत्व का होता है। परन्तु विद्यार्थियों की क्षमताओं और प्रतिभाओं को देखते हुए कुछ विषय विशेष हो जाते हैं। इसलिए विशेष विषयों को पहले स्थान देना चाहिए। कुछ विषय

अधिक बौद्धिक गतिविधियों की मांग करते हैं। उनकी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में थकावट महसूस होती है। इसलिए इनके पीरियड के बीच कुछ मनोरंजन और बदलाव के आवश्यकता रहती है। इसका ध्यान रखना जरूरी रहता है।

विद्यालय आधारित व्यावहारिक क्रियाकलाप, इंटर्नशिप का संगठन एवं समयावधि

शिक्षक शिक्षा के क्रियात्मक प्रशिक्षण के अंतर्गत यह अत्यंत ही आवश्यक है कि सभी क्रियाकलापों को उनकी समयावधि के साथ, उन्हें अच्छी तरह से व्यवस्थित एवं संगठित करके, क्रियान्वित किया जाए।

बी.एड. प्रशिक्षण के 2 वर्ष की समयावधि में कराये जाने वाले विभिन्न विद्यालय आधारित व्यावहारिक/क्रियात्मक क्रियाकलापों एवं इंटर्नशिप को उनकी समयावधि के साथ निम्नवत संगठित करके पूर्ण किया जाता है-

Preparation To Function as a Teacher (Teaching Skills)

During the first year, the teacher-preparation programme will offer the training amounting to a minimum of 5 weeks. This will include:

•One week workshop on Lesson-Planning based on constructivistic apporach (Covering different aspects like theory of lesson-planning, questioning, Defective Questions, Developing Question, How to put Question, How to receive Answers, Discipline, Role of Eye-control, etc.).

•One week workshop on ‘Micro-Teaching’ (atleast 5 teaching skills will be mastered in each Pedagogy course like-Introduction, Reinforcement, Probing Question, Stimulus Variation, Explaining etc.).

•One week Practice-Teaching in Simulated condition in each Pedagogy course. During this phase every student-teacher will teach atleast 5 lessons. These lessons will be observed by subject-supervisors

•Two week Practice-Teaching in Real-Class room situation in a school. For it, the student-teachers will be attached to a particular school as ‘School Attachment’, where they will deliver their lessons. During this phase every student-teacher will teach atleast 25 lessons. These lessons will be observed by peers as well as by subject-supervisors daily, which will provide them feedback for the modification of their behavior.This shorter period is to provide the student-teachers adequate exposure to have a ‘feel’ of dealing with teaching-learning. It will help him/her to develop the basic teaching skill required to deal with students effectively in classroom.

School Internship (Teaching Competence)

In the second year, there shall be a minimum of 16 weeks of intensive engagement with the school in the form of School Internship. For this, the student-teachers will go for 'School Placement', during which their role in the school is something like an apprentice and they shall work as a regular teacher & participate in all the school activities including planning, teaching and assessment, interacting with school-teachers, & children to understand the school in totality its philosophy & aims, organisation and management, the life of a teacher, the needs of the physical, mental and emotional development of children. They will be engaged in school functioning in all its aspects in consultation with the School-mentor, like-

•Participating in various 'out-of-class room' activities in school.

•Organizing events eg., cultural activities, debates, games, quiz, essay-competition, drama, etc.

•Preparation of School calendar, time-table, assessment schedule, evaluation tools etc.

•Preparing a suggested comprehensive plan of action for some aspect of school improvement.School-Internship shall be designed to lead to the development of 'Teaching Competence of a professional, teacher dispositions and sensitivity.

Duiring internship, student-teachers will be provided opportunities to teach in government and private schools with systematic support and feedback from the faculty. DuringI this period, student-teachers will be actively engaged in teaching at school and will participate in day-to-day activities of school.

It is important that the student-teachers will consolidate and reflect on their teaching experience during the school-internship.

•Student-teachers will maintain a Journal (A Diary) in which he/she records one's experiences and observations, etc. daily.

•Student-teachers will maintain a Portfolio of all the activities like-details of daily-teaching eg., topic, date, class, objectives of teaching, resources used, assessment tools, homework given, etc.

•Student-teachers will teach at least 30 lessons during internship period. These lessons will be observed by their mentors in the school.

•Student-teachers will work on an Action Research based Project on any Educational problem of School, which will be selected in consultation with the concerned faculty supervisor. Final Presentation At the end of School-Internship each student-teacher will be expected to present

•The Journal – Containing day-to-day report about different activities, like-teaching, events, etc. mentioned above.

•The Portfolio - Containing evidences (proof) of different activities and events in the form of different photographs, etc.

•The Project Report -Containing the data, analysis and interpretation based on Action Research conducted by him/her.

•Presentation of Teaching through ICT - on any topic of school subject.

These four activities will be included in the evaluation of School Internship.

- **The Journal of 50 marks**
- **The Portfolio of 50 marks**
- **The Project Report of 50 marks**
- **Presentation of teaching through ICT on any topic of school subject of 50 marks**